शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 6, अंक : 178 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, मंगलवार
05 अक्टूबर, 2021
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं: डॉ. ख़लील खान

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। डॉ खलील खान प्रशिक्षण के दौरान किसान भाइयों से अपील की है कि वह धान की फसल कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर,सुपर सीडर,पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी। जिससे मृदा में सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है। इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह,उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह,रामबाबू,विश्राम सिंह,राम लखन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • मंगलवार • 5 अक्टूबर • 2021

खेतों में फसल अवशेष न जलाने को लेकर सीएसए कर रहा जागरूक

कानपुर (एसएनबी)। वायु प्रदूषण के साथ ही खेतों को स्वस्थ्य रखने के लिए सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि किसानों को फसल अवशेषों को खेतों में न जलाने को लेकर जागरूक कर रहा है। विवि द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने उर्मदा ब्लॉक के बलनपुर गांव में आयोजित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों से कहा कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं, क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियां आदि के पोषकतत्व नष्ट हो जाते हैं।

> बलनपुर गांव में कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम कर किया गया किसानों को जागरूक

उन्होंने कहा कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर इसका विपरीत असर पड़ता है। मृदा में मौजूद सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। इससे मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते हैं। परिणामस्वरूप उत्पादन में गिरावट आ जाती है। फसल अवशेषों को खेतों में जलाने से वायु प्रदूषित होती है, जो अनेक बीमारियों को जन्म देती है। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करने में भी समस्या आती है। फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों व घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है।डॉ.खान ने किसानों से कहा कि फसल अवशेषों को उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में उसका प्रयोग करें। इससे खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ने के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या भी बढ़ती है। भूमि की जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है। फसल अवशेषों के प्रबंधन से खरपतवार कम होते हैं व जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ जाती है। यहां हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह, उमेशचन्द्र, पिंटू यादव, तिर्वा के उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बीएस सिंह, रामबाबू, विश्राम सिंह, राम लखन आदि थे।

उर्मिला ब्लॉक के बलनपुर गांव में कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते वैज्ञानिक डॉ. खलील खान व अन्य। फोटो : एसएनबी

आज महानगर

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं

कानपुर, 4 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक डॉ खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अज्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाई फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:268 | देहरादून, सोमवार, 04 अक्टूबर, 2021 | पृष्ठ:08

देहरादून, सोमवार 04 अक्टूबर, 2021 — उत्तर प्रदेश — जनमत टुडे 5

खेतों में फसलों का अवशेष न जलाएं किसान

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसानों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते है मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाई फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है।

डॉ. खान ने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें डॉ खलील खान प्रशिक्षण के दौरान किसान भाइयों से अपील की है कि वह धान की फसल कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी जिससे मृदा में सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह, उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह, रामबाबू, विश्राम सिंह, राम लखन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

UPHIN/2009/44666
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
सत्ता एक्सप्रेस
05/10/2021
डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त
वर्ष 12 अंक : 350 कानपुर देहात, मंगलवार 05 अक्टूबर 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com पृष्ठ

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं- डॉ. खलील खान

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा मे उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नही पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नही कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है।

वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाई फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है।डॉ. खान ने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। डॉ खलील खान प्रशिक्षण के दौरान किसान भाइयों से अपील की है कि वह धान की फसल कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर,सुपर सीडर,पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी। जिससे मृदा में सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है। इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह,उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह,रामबाबू,विश्राम सिंह,राम लखन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

News Expert
13h ·

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं: डॉ. खलील खान

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा मे उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नही पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नही कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती हैं। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। डॉ खलील खान प्रशिक्षण के दौरान किसान भाइयों से अपील की है कि वह धान की फसल कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर,सुपर सीडर,पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी। जिससे मृदा में सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है। इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह, उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह, रामबाबू, विश्राम सिंह, राम लखन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

R10 NEWS 24

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं : डॉ. खलील खान

Home / समाचार / कृषि / किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं : डॉ. खलील खान

किसान खेतों में फसल अवशेष न जलाएं : डॉ. खलील खान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र, अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने जनपद के समस्त किसानों से अपील की है कि वे अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खान ने यह बात ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही। उन्होंने यह भी बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है। मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाई फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा। जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है। फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है।

डॉ. खान ने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे किसान अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। डॉ. खलील खान प्रशिक्षण के दौरान किसान भाइयों से अपील की है कि वह धान की फसल कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर, सुपर सीडर, पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करने से 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी। जिससे मृदा में सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है। इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह, उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह, रामबाबू, विश्राम सिंह, राम लखन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

किसान खेतों में धान की फसल के अवशेषों 'पराली' आदि को ना जलाएं : डॉ. खलील

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियों आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं इसलिए किसान अपने खेतों में धान की फसल के अवशेषों (पराली) आदि को ना जलाएं। यह बात सीएसएयू द्वारा संचालित विज्ञान केंद्र अनोगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने ग्राम बलनपुर ब्लॉक उमर्दा में किसानों को प्रशिक्षण के दौरान कही। उन्होंने बताया कि अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि होती है जिसके कारण उसके भौतिक, रासायनिक और जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है जिससे उसमे मौजूद सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते है और मिट्टी में उपस्थित जीवांश के अच्छी प्रकार से सड़ न पाने के कारण पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते और उत्पादन में गिरावट आती है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने का डर रहता है और वायु प्रदूषण फैलने से अस्थमा एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। डॉ.खान ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि वह धान की फसल कटाई के बाद फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे मल्चर,सुपर सीडर,पैडी स्ट्रा आदि से धान के फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मिट्टी में जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त धान के पुआल को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करने से 8 से 10 दिन में सड़ जाएगी व खेत में खाद का काम करेगी। इस अवसर पर हिम्मतपुर गांव के जयचंद्र सिंह, उमेशचंद्र, पिंटू यादव, तिर्वा उन्नत किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर बालसटर सिंह, सहित अन्य लोग मौजूद रहे।